

कृषि-कोश

प्रथम खण्ड

('अ' से 'घ' तक)



सम्पादक

डॉ० विश्वनाथप्रसाद

अनुसन्धान-सहायक

श्री श्रुतिदेव शास्त्री : श्री राधावल्लभ शर्मा

कृषिकोश

। कृषिक्षेत्र के विज्ञानों के अनुसार विहारी क्षेत्रों के विविध क्षेत्रों के
संबन्धीत जन-सम्पर्क में प्रचलित कृषि-शब्दों को उनके स्थायी
तथा वैयक्तिक पर्याय-सहित प्रामाणिक सचित्र अभिधान ।

प्रथम खण्ड

['अ' से 'घ' तक]

सम्पादक

डॉक्टर विश्वनाथ प्रसाद

अनुसन्धान-सहायक

श्रीश्रुतिदेवशास्त्री : श्रीराधावल्लभ शर्मा



बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

पटना-४

© बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

प्रकाशक : बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
आचार्य शिवपूजन सहस्र मर्म
मैदपुर, पटना - ८०१ ००४

द्वितीय संस्करण : विक्रमाब्द २०५७, ई० सन् २००१

मूल्य : ₹ २५.०० रुपये

मुद्रक : इन्दिरा इन्टरनेशनल
होम तरुण प्रिन्टर्स, शाहदरा, दिल्ली-३२

द्वितीय संस्करण की भूमिका

हिन्दी भी भाषा की जीवंतता उसके संवर्द्धनशील शब्दकोश की सफलता से निर्धारित होती है। इसके अनेक जालों में सबसे प्रमुख जाल है आंचलिक शब्द-कोश।

यह सोचते हुए स्वल्पेन हमें है कि शहरोन्नयन और प्रौद्योगिक विकास की अथो रीति में अपनी-अपनी बोलियों से, अपने-अपने लोकगीतों और संस्कार-गोत्रों से हमारी सभी पीढ़ी का संपर्क टूट रहा है।

इसका जो दुःख परिणाम है वह है : हिंदीभाषा में आंचलिक शब्दों का अवलोकन प्रवृत्ति, फलवर्णन और इनके प्रति दृष्टिकोण असावधानता।

ऐसी स्थिति में कृषिकोश— जैसे शब्दशोधक ग्रंथ का महत्त्व असाधारण रूप से बढ़ जाता है। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् ने सामूहिक प्रयत्न और कठिन परिश्रम से कृषिकोश तैयार करवाया था। बिहार की सर्वोप बोलियों में वृत्ति-संस्कृति में इर्चलित (और अब लगभग विस्मृत) शब्दों का प्रस्तुत कोश परिषद् के शोधकार्यों में उत्कृष्टतम माना जाता है।

कृषिकोश के दो खंड क्रमशः प्रकाशित किये गये थे। प्रस्तुत प्रथम खंड में 'अ' से 'च' तक के शब्द वर्णित हुए हैं। वर्णमाला के शेष शब्द द्वितीय खंड में समाहित हैं।

अज्ञा है, प्रामीण जंगलों में प्रचलित शब्दों के अर्थ और तत्संबंधी विवरण को अब भी अपेक्षा होगी, प्रस्तुत कोश निश्चित ही उसमें सहायक होगा।

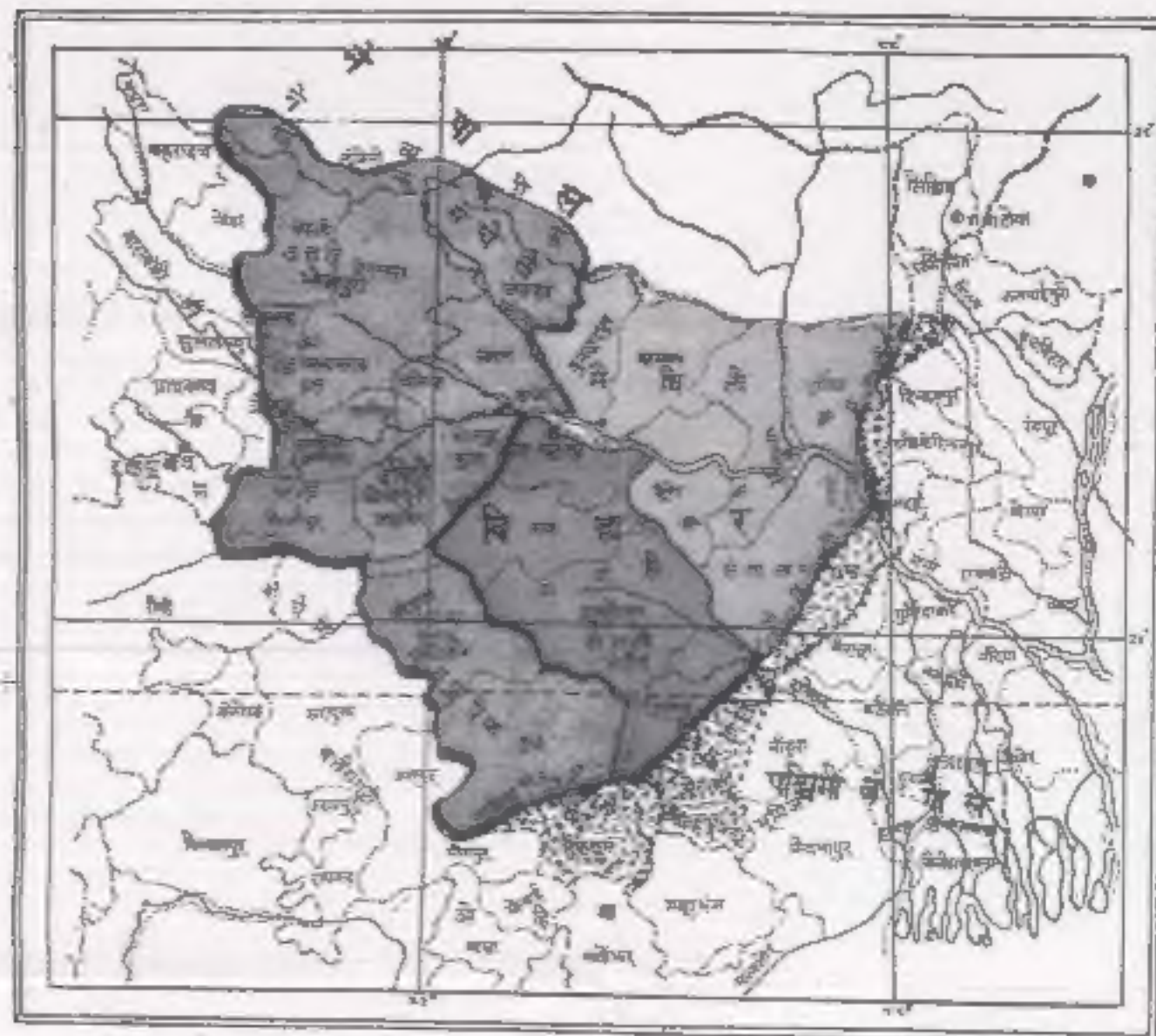
रामधारी सिंह दिवाकर
(निर्देशक)

दीर्घात्मक
विक्रम सं० २०५०
२६ अक्टूबर, २०००

बिहार की जल्य क्षेत्रों के लक्ष्य - लक्ष्य भौगोलिक क्षेत्र, स्थिति तथा उसके विशेषताओं का

व्याख्या

माप - एक इंच = 100 मील



भी हम अपना मौलिक ही समझते हैं कि यह कठिन कार्य किसी तरह हम विचार में स्वीकृत करनेवाले महापुरुषों के समक्ष प्रकाश में ले जा सका।

संभव है कि कार्य की सीमा का अपना अनुमान के कारण इस संदर्भ में कुछ भ्रम भाव न आ सके हो, जिसकी जानकारी अन्य सबको हो। कोई भी कोशकार साहित्य अकादमी से ही नहीं कि सर्वश्रेष्ठ का हाक कर सके। कोश-कार्य में अज्ञानों की गंभीर संभावना बढ़ती है, जिसका पता तो अनुमान के बाद ही लगता है और जिसके निर्देश कोशकार को कुछ तो उदात्तपूर्ण मिलने हैं और कुछ सीमा बाधों के साथ। सीमा से ही कुछ मात्र से आगे के लिए विचार-मार्ग करने को मैं अनिवार्य बाध देता।

परन्तु एक ओर कोश-कार्य की महत्त्वपूर्ण, विशालता तथा अपने चरित्र-चरित्रों की और दूसरी ओर अपनी समित्त अकिनी तथा आपनों की देखभाल हमें कहना पड़ता है—

‘विहीतुं दुःखमन्वेदः। दुःखेनास्मि चलायते।’

विश्वनाथ प्रसाद
संपादक

संग्रहकार, मार्गशीर्ष, शुक्ल-६ (सकलपत्री) सं० २०१५ वि०,
क० भू० हिन्दी तथा भाषा-विज्ञान विद्यापीठ
आगरा-विश्वविद्यालय
आगरा

प्रस्तावना

विद्या-निदेश की विविध लोकभाषाओं का वैज्ञानिक अध्ययन-अनुसंधान विद्या-अध्ययन-अभिवृद्ध का एक प्रमुख उद्देश्य है। इसके लिए कार्यक्रम से ही उसके अन्तर्गत ‘लोकभाषा-अनुसंधान-विभाग’ में निर्देशन-निरीक्षण से कार्य करता आ रहा है। हमने विचार की लोकभाषाओं और लोक-साहित्य के अध्ययन से लिए एक योजना बनाई, जिसके अनुसार लोकभाषा और साहित्य-संबंधी सामग्रियों का संग्रह किया जा सके। परन्तु सर सौम्य ने विभिन्न अलिखित सामग्रियों, लोक-गीतों, कथाओं, गद्यांशों, कदंबों, परेजियों, मुहावरों और शब्दों का संकलन प्रारम्भ वैज्ञानिक कार्य-कार्यवाही द्वारा करना करने लगा। प्रारम्भिक कार्यकर्ता विभिन्न भाषा-क्षेत्रों के गाँवों में जाकर स्थल-विषयों से निरीक्षण और उत्तम व्यवहारों के व्यवस्थापकों से मिलकर गीतों, कथाओं, परेजियों आदि को लिखित, उद्धृत, सुधार आदि व्यवस्थापकों से उन-उन विषयों के तन्त्रों का संसार करते और कार्य-कार्य को मेजबानों से भी सही हो प्रमाणित अनुसंधानक उनका निरीक्षण-अनुसंधान करके उनकी उपयोगिता और लोकभाव की जाँचकर उन्हें संपादित करते थे। किन्तु यह प्रक्रियाएँ एक वर्ष तक ही चली; क्योंकि इन संसाधक कार्य-कार्यवाही द्वारा किया गया कार्य संतोषजनक नहीं प्रमाणित हुआ। अतः वैज्ञानिक कार्य का विशेषज्ञता ठहरा दिया गया और उसके स्थान में विभिन्न क्षेत्रों के लोक-साहित्य के ज्ञातरी कार्य-कार्यवाही के द्वारा पारम्परिक के आधार पर साक्षरियों का संकलन कराया जाने लगा। इसके लिए हमारे विशेष लक्ष्य से तैयार किए हुए निर्देशन के अनुसार विद्या की मैथिली, मगही, मोरपुरी और संताली की सामग्रियों एकत्र की जाने लगी। अन्ततः इन भाषा क्षेत्रों की बहुत सामग्री संग्रहित हो चुकी है। आकारों और पर इत प्रकाश का यह महत्त्व कार्य था, जिसे विद्या-साध्य सरकार ने प्रारम्भ किया और बाद में यह दूसरे राज्यों के लिए अनुकरणीय हो गया। ऐतिहासिक रूप से कुछ सामग्रियों के संग्रह की कार्य के बाद सबसे पहले ही कार्य कुछ दिनों में—पहला ‘मगही संस्कार-गीतों’ का संग्रहण और दूसरा ‘झुमकी-पद्य’ का। ‘मगही संस्कार-गीतों’ में, विविध संस्कारों के समय गाये जानेवाले मगही-क्षेत्र के लोक-गीतों का संग्रह किया गया है। इन संग्रह से मगही लोक-गीतों का मुख्यतः, उनका अर्थ, व्याख्यान दिया गया, परिचित आदि देकर एक विस्तृत भूमिका के साथ संग्रह किया गया है, जो लिखित भविष्य में सुविधा होवेसकता है।

(कानून विभाग विद्यालय दिल्ली विश्वविद्यालय १९३३, १९५०, एड १९५३-५४) में प्रकाशित किया था। निम्नलिखित में भी संशोधन का कार्य जारी रखा गया है। १९५३ में विभाग के अध्यक्ष ने भारत सरकार के विदेश विभाग के अध्यक्ष को एक पत्र लिखा था जिसमें उन्होंने भारत सरकार के विदेश विभाग के अध्यक्ष को एक पत्र लिखा था जिसमें उन्होंने भारत सरकार के विदेश विभाग के अध्यक्ष को एक पत्र लिखा था।

विभाग के अध्यक्ष ने भारत सरकार के विदेश विभाग के अध्यक्ष को एक पत्र लिखा था जिसमें उन्होंने भारत सरकार के विदेश विभाग के अध्यक्ष को एक पत्र लिखा था।

१. १९५३ में भारत सरकार के विदेश विभाग के अध्यक्ष को एक पत्र लिखा था जिसमें उन्होंने भारत सरकार के विदेश विभाग के अध्यक्ष को एक पत्र लिखा था।

१९५३ में भारत सरकार के विदेश विभाग के अध्यक्ष को एक पत्र लिखा था जिसमें उन्होंने भारत सरकार के विदेश विभाग के अध्यक्ष को एक पत्र लिखा था।

१९५३ में भारत सरकार के विदेश विभाग के अध्यक्ष को एक पत्र लिखा था जिसमें उन्होंने भारत सरकार के विदेश विभाग के अध्यक्ष को एक पत्र लिखा था।

१९५३ में भारत सरकार के विदेश विभाग के अध्यक्ष को एक पत्र लिखा था जिसमें उन्होंने भारत सरकार के विदेश विभाग के अध्यक्ष को एक पत्र लिखा था।

१९५३ में भारत सरकार के विदेश विभाग के अध्यक्ष को एक पत्र लिखा था जिसमें उन्होंने भारत सरकार के विदेश विभाग के अध्यक्ष को एक पत्र लिखा था।

- [illegible]

- [illegible]

संभवस्थानों के विषय सूची के इन सभी पक्षों की उपयोगिता को धन्य-भाँति
नमस्कार सहित आप से इनके सदा स्थान रहने की बातें किया गया है।

जन-सुझाव के स्तंभ

बत प्रमात्र के अन विभिन्न वर्गों के बीच में एक गृह, कक्षाओं से संग्रह करवाया
बाद में उनका लक्ष्य है कि सर्वोत्तम की नई पीढ़ी का रहना हो —

- | | |
|---|------------------|
| १. विज्ञान | ७. गणित |
| २. अर्थशास्त्र | ८. इतिहास |
| ३. साहित्य, समाज और नीति | ९. भूगोल |
| ४. कृषि | १०. व्याकरण-भाषा |
| ५. गणित | ११. कला |
| ६. राजस्व मन्त्रालय की छात्रों की छात्र | १२. योग |

समूह-संसार के विविध क्षेत्रों की सूची तथा उनका निर्देश

[illegible]

निर्देश-पत्र और उनके प्रसिद्ध रूप

[illegible][illegible]

[illegible]

(विन्द-२, भाग-४ विन्द-५, भाग-२)

॥०॥ ॥१॥—॥०॥ ॥१॥

५०३

[illegible]

कृषिकोश

[illegible][illegible][illegible][illegible]

[illegible][illegible][illegible][illegible]

दासों की विवेकशक्ति का प्रयोग करके
 निम्नलिखित बातों पर विचार करें
 क्या वे सही हैं? यदि नहीं तो क्यों नहीं?
 उनकी सलाह को क्यों (कब) नहीं मानें?
 यदि मानें तो क्यों? (किसी विशेष कारण से)
 यदि नहीं मानें तो क्यों? (किसी विशेष कारण से)
 यदि मानें तो क्यों? (किसी विशेष कारण से)



गोमय + गो + मय = गोमय
 गोमय + गोमय = गोमय + गोमय
 गोमय + गोमय = गोमय + गोमय

१५५५—(५५) एक प्रकार का पत्र । इसका
 एक सम्बन्धित होता है जहाँ एक-दूसरे
 एक-दूसरे को एक-दूसरे के सम्बन्ध में होता है,
 और जो-किसी के सम्बन्ध में होता है, वह एक
 ही ही होता है । यह भी सम्बन्धित
 होता है । यह एक के साथ ही होता है ।
 यह एक ही होता है । (५५) ५५५५
 ५५५५, ५५५५, ५५५५, ५५५५ । ५५५५
 ५५५५ । ५५५५ (५५, ५५५५)

गीत-संज्ञा—(१) पुस्तक संज्ञा
 गीत-संज्ञा के अन्तर्गत का पुस्तक संज्ञा
 गीत-संज्ञा के अन्तर्गत का पुस्तक संज्ञा
 गीत-संज्ञा के अन्तर्गत का पुस्तक संज्ञा
 गीत-संज्ञा के अन्तर्गत का पुस्तक संज्ञा

[illegible]

कमरेदार-ईश्वर : कृपासे ११ क्लासी का कक्षा
का काम चल रहा है किशन सिंह, क.प्र.प.
कानपुर जल

३. अव्यय : (अ०, ई०-अ०) (अ०, ई०-अ०) (अ०, ई०-अ०)
 अ०, ई०-अ० (अ०, ई०-अ०) (अ०, ई०-अ०)

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

[illegible]

कर्मज (६०) एक प्रसिद्ध कृष्ण । वह गायी के
 रंगों से रंगा गयो
 कर्मज (६०) के कर्मों
 यामोत्र गंगा गंगा है ।
 दृष्टि अतिशय शक्ति,
 गंगा की शक्ति शक्ति
 फल शक्ति है । यामोत्र-गंगा



मीमांसा के चार प्रमुख शाखाएँ हैं : १. मीमांसा, २. न्याय, ३. श्रौत, ४. श्रौत।
 मीमांसा के चार प्रमुख शाखाएँ हैं : १. मीमांसा, २. न्याय, ३. श्रौत, ४. श्रौत।

[illegible]

उदाहरण १.१.१. (१) $\frac{1}{x^2} = x^{-2}$ का अवकलन करने पर

सूचिका संख्या {सूचिका} १२३४

[illegible][illegible][illegible]

ਸਮਾਂ: 15.00	ਭਾਗ: 1	ਚੈਂਸ: 10
ਕੁਲ ਮਾਰਕਾਂ: 100	ਭਾਗ: 1	ਚੈਂਸ: 10
ਕੁਲ ਮਾਰਕਾਂ: 100	ਭਾਗ: 1	ਚੈਂਸ: 10

उत्तर—(१०)→(१) शीतलपत्रों का नाम
कान्ठशीत कृत्तविक १०→शुद्धा (२)
पत्रों का नाम कान्ठशीत कृत्तविक १०→
यत् [८ शुद्धा]

१. १५/११/२०१८
 २. १५/११/२०१८
 ३. १५/११/२०१८

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्री कृष्णाय नमः ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्री कृष्णाय नमः ॥

[समस्या (10) < १०००]
 १००००० १००० १००० १००० १००० १००० १००० १००० १००० १०००
 १००००० १००० १००० १००० १००० १००० १००० १००० १००० १०००

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible][illegible]

प्रश्न सं. : ८ सत्र : २०१०-११
 विषय : हिन्दी

कृपया निम्न सूक्त उद्धृत करी विकल्पों में से
 सही विकल्प चुनिए। (१० अं.)

[illegible]

[illegible][illegible][illegible][illegible]

शुद्धि-पत्र

क्र	श्लोक	टीका	शुद्ध
६	३	१९	संस्कारा
७	१	२१	दे० संस्काराह (विदुः क. ल.)
८	२-३	४	दे० संस्कारा १२ अनाम जे प. ८। मानेवः। छोटा संस्कार।
९	१	२०	संस्कारा + संस्कार। दे० संस्कार।
१०	३	२५	के बाद
११	३	२६	के बाद
१२	३	२७	के बाद
१३	३	२८	के बाद
१४	३	२९	के बाद
१५	३	३०	के बाद
१६	३	३१	के बाद
१७	३	३२	के बाद
१८	३	३३	के बाद
१९	३	३४	के बाद
२०	३	३५	के बाद
२१	३	३६	के बाद
२२	३	३७	के बाद
२३	३	३८	के बाद
२४	३	३९	के बाद
२५	३	४०	के बाद
२६	३	४१	के बाद
२७	३	४२	के बाद
२८	३	४३	के बाद
२९	३	४४	के बाद
३०	३	४५	के बाद
३१	३	४६	के बाद
३२	३	४७	के बाद
३३	३	४८	के बाद
३४	३	४९	के बाद
३५	३	५०	के बाद
३६	३	५१	के बाद
३७	३	५२	के बाद
३८	३	५३	के बाद
३९	३	५४	के बाद
४०	३	५५	के बाद
४१	३	५६	के बाद
४२	३	५७	के बाद
४३	३	५८	के बाद
४४	३	५९	के बाद
४५	३	६०	के बाद
४६	३	६१	के बाद
४७	३	६२	के बाद
४८	३	६३	के बाद
४९	३	६४	के बाद
५०	३	६५	के बाद
५१	३	६६	के बाद
५२	३	६७	के बाद
५३	३	६८	के बाद
५४	३	६९	के बाद
५५	३	७०	के बाद
५६	३	७१	के बाद
५७	३	७२	के बाद
५८	३	७३	के बाद
५९	३	७४	के बाद
६०	३	७५	के बाद
६१	३	७६	के बाद
६२	३	७७	के बाद
६३	३	७८	के बाद
६४	३	७९	के बाद
६५	३	८०	के बाद
६६	३	८१	के बाद
६७	३	८२	के बाद
६८	३	८३	के बाद
६९	३	८४	के बाद
७०	३	८५	के बाद
७१	३	८६	के बाद
७२	३	८७	के बाद
७३	३	८८	के बाद
७४	३	८९	के बाद
७५	३	९०	के बाद
७६	३	९१	के बाद
७७	३	९२	के बाद
७८	३	९३	के बाद
७९	३	९४	के बाद
८०	३	९५	के बाद
८१	३	९६	के बाद
८२	३	९७	के बाद
८३	३	९८	के बाद
८४	३	९९	के बाद
८५	३	१००	के बाद

पृष्ठ	संज्ञा	वर्ण	अक्षर	संज्ञा
१२२	१	१८	(दि०)	(दि०)
१२३	१	१९	(अक्षर)	(अक्षर)
१२४	२	२०	(२) — (वि०)	(२) — (वि०) — गुण (वि०)
१२५	३	२१	द्वि (गुण)	द्वि
१२६	४	२२	√दि	√दि
१२७	५	२३	√दि	√दि
१२८	६	२४	अक्षर द्वि द्वि	अक्षर द्वि
१२९	७	२५	द्वि	द्वि]
१३०	८	२६	(वि०)	(वि०)
१३१	९	२७	√दि]	√दि
१३२	१०	२८	अक्षर	अक्षर
१३३	११	२९	अक्षर	अक्षर
१३४	१२	३०	(वि०)	(वि०) =
१३५	१३	३१	(गु०)	(गु०) =
१३६	१४	३२	(अक्षर)	(अक्षर) =
१३७	१५	३३	अक्षर	अक्षर
१३८	१६	३४	(१)	(१)
१३९	१७	३५	अक्षर	अक्षर
१४०	१८	३६	(अक्षर (१))	(अक्षर — (१)) [
१४१	१९	३७	(दि०, अ०)	(दि०, अ०)
१४२	२०	३८	अक्षर	अक्षर <
१४३	२१	३९	अक्षर	अक्षर
१४४	२२	४०	अक्षर =	— अक्षर =
१४५	२३	४१	अक्षर	अक्षर
१४६	२४	४२	अक्षर	अक्षर
१४७	२५	४३	अक्षर	अक्षर
१४८	२६	४४	अक्षर	अक्षर
१४९	२७	४५	अक्षर	अक्षर
१५०	२८	४६	अक्षर	अक्षर
१५१	२९	४७	अक्षर	अक्षर
१५२	३०	४८	अक्षर	अक्षर
१५३	३१	४९	अक्षर	अक्षर
१५४	३२	५०	अक्षर	अक्षर
१५५	३३	५१	अक्षर	अक्षर
१५६	३४	५२	अक्षर	अक्षर
१५७	३५	५३	अक्षर	अक्षर
१५८	३६	५४	अक्षर	अक्षर
१५९	३७	५५	अक्षर	अक्षर
१६०	३८	५६	अक्षर	अक्षर

कृषि-कोश

सम्पादक

डॉ० विश्वनाथप्रसाद

अनुसन्धान-सहायक

श्री श्रुतिदेव शाल्वी : श्री राधावल्लभ शर्मा



बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

पटना-४